रोहतास महिला महाविद्यालय, सासाराम
अध्ययन सामग्री : संस्कृत
स्नातक भाग- 2, पत्र-3
शिवराजविजय

डॉ. सावित्री सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग.

Topic: "शिवराजविजय के आधार पर सूर्योदय का वर्णन"

महाकवि अम्बिकादत्त व्यास ने अपने ऐतिहासिक उपन्यास शिवराजविजय का प्रारम्भ ही सूर्योदय की सुषमा के वर्णन के साथ किया है।

अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः। एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचर-चक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोकः कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य। अयमेव अहोरात्रं जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति, अयमेव कारणं षण्णामृतूनाम्, एष स्वीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, एनेनैव सम्पादिता युगभेदाः, एनेनैव कृताः कल्पभेदाः, एनमेवाऽऽश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्द्धसङ्ख्या, असावेव चर्करीति बर्भर्ति जर्हर्ति च जगत्, वेदा एतस्यैव वन्दिनः, गायत्री अमुमेव गायति, ब्रह्मनिष्ठा ब्राह्मणा अमुमेवाहरहरुपतिष्ठन्ते। धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य, प्रणम्य एष विश्वेषामि' ति उदयन्तं भास्वन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटीरात् निष्चक्राम कश्चित् षोडशवर्षदेशीयो वटुः।

पूर्व दिशा में भगवान सूर्य का यह रक्तिम प्रकाश है। यह भगवान भास्कर गगनमण्डल के मणि, नक्षत्र समुदाय के चक्रवर्ती नृपति, पुरन्दर दिशा प्राची रूपी नायिका के कुण्डल, ब्रह्माण्डरूपी भवन के प्रकाशक,

→

कमल समूह के अतिशय प्रिय, चक्रवाकवात के शोक का अपसारण करने वाले, द्विरेफ समूह के आश्रय, निखिल व्यवहार के प्रवर्तक और दिवस के स्वामी हैं। यही भगवान दिन और रात के जनक हैं। ये ही वर्ष को बारह भागों में विभक्त करते हैं। वसन्तादि षड् ऋतुओं के ये ही कारणभूत हैं। ये ही उत्तरायण और दक्षिणायन रूप द्विमार्गों का अवलम्बन करते हैं। इन्होंने ही चतुर्युगों (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग) का विभेद सम्पादित किया है। इन्होंने ही कल्पों का विभाजन किया है। इन्हीं को आधारभूत बनाकर विधाता की अन्तिम परार्द्ध संख्या पूर्णता को प्राप्त करती है। ये ही भगवान अशेष संसार का पुनः पुनः सृजन, पालन और संहार करते हैं। वेद इन्हीं की स्तुति करते हैं। गायत्री देवी इन्हीं का गान करती हैं। ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण प्रतिदिन इन्हीं की अर्चना करते हैं। श्रीरामचन्द्र के कुल के मूल ये भगवान सूर्य धन्य हैं। ये समस्त जनों के लिए वन्दनीय हैं।

क्रमशः